

स्नेह मास

मन मेरा मित्र - 4

22.08.2017

1. स्वमान - मैं सर्व का स्नेही शुभचिंतक मणि हूँ।

- 'शुभ चिंतन से अपनी स्थिति बना सकेंगे और शुभचिंतक बनने से अनेक आत्माओं की सेवा कर सकेंगे।' - शिवभगवानुवाच

2. योगाभ्यास -

अ. 'मैं सर्व का स्नेही शुभचिंतक मणि हूँ' - इस स्वमान को दिन में कम से कम 10 बार अपनी गहरी फीलिंग में लायें...अभ्यास व अनुभव करें...।

ब. सकाश - 'स्वयं सदा मन के शांति स्वरूप बन, सदा हर संकल्प में शक्तिशाली बन, शुभभावना शुभ कामना द्वारा, दाता बन सुख-शांति के, शक्ति की किरणें वायुमंडल में फैलाते रहो।' - आयें, हम मन दोस्त को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करके विभिन्न स्वरूप की किरणों द्वारा सर्व आत्माओं व प्रकृति को वायब्रेशन्स/सकाश दें।

स. योग का प्रयोग - कोई व्यक्ति बिल्कुल आपके खिलाफ है...आपसे नफरत/ईर्ष्या/घृणा करता है...उसे शुभभावनाओं का दान देंगे...योग का प्रयोग कर उसे परिवर्तित करेंगे...।

3. धारणा - सर्व के लिये स्नेह की वृत्ति

- स्नेह में इतनी शक्ति है जो पत्थर को भी पानी बना देता है।
- स्नेह की शक्ति से किसी को भी परिवर्तित किया जा सकता है।

4. चिंतन -

- शुभचिंतन की आवश्यकता एवं महत्ता ?
- व्यर्थ या अशुभ चिंतन का कारण ?
- कैसे स्वयं व सर्व के लिये सदा शुभचिंतन करें/शुभचिंतक बनें ?
- इस संदर्भ में बाबा के महावाक्य ?

5. स्वराज्याधिकारियों प्रति - प्रिय स्वराज्याधिकारियों! हमारे पिता स्नेह के सागर हैं। सारा संसार उन्हें प्यार का सागर कहकर पुकारता है। वो सबको समान रूप से प्यार देते हैं। ऐसे ही हमें भी अपने पिता को फॉलो करना है। सर्व का स्नेही बनना है। साथ ही जैसे बाबा सबके शुभचिंतक हैं। सबके कल्याणकारी हैं। कोई कितना भी पापी क्यों ना हो, उसके लिये भी हमारे पिता के मन में कल्याण की भावना रहती है। हम भी स्व और सर्व के लिये ऐसे ही शुभचिंतक मणि बनें।